दैनिक जागरण

शुक्रवार, 1 जनवरी, 2016 : पौष कृष्ण 7, वि. 2072

जो संकल्प कर सकता है उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है

बेहतर कल के लिए

यह परिवर्तन ही है जो प्रति क्षण होता है, फिर भी हर नए दिन की तरह नव वर्ष एक नया अहसास लेकर आता है। वह बदलाव के भाव के साथ बेहतर कल की उम्मीद भी जगाता है। उम्मीदों के साथ कुछ अंदेशे भी होते हैं-कभी आने वाली चुनौतियों के रूप में और कभी पहले से चली आ रही समस्याओं के रूप में। चुनौतियों से पार पाना और समस्याओं का समाधान करना ही उम्मीदों को पूरा करना है। इससे बेहतर और कुछ नहीं कि तमाम समस्याओं और चुनौतियों के बावजूद हम एक राष्ट्र के रूप में इसके प्रति आश्वस्त हैं कि आने वाला कल हमारा है। यह भरोसा एक बड़ी ताकत बनता है। यह ताकत बनी रहे और देश वह सब कुछ हासिल कर सके जिसके सपने देखे जा रहे हैं और जो उम्मीदों और अपेक्षाओं का हिस्सा हैं, इसके लिए हर स्तर पर नई सोच के साथ नए तौर-तरीकों की दरकार है। यह आवश्यक नहीं कि नववर्ष के अवसर पर हर कोई नए संकल्पों से लैस हो, लेकिन चुनौतियों से पार पाने की प्रतिबद्धता तो व्यक्त करनी ही होगी। एक ऐसे समय जब नया वर्ष नई उम्मीदों के साथ आया है तब उन्हें पूरा करने में सहायक बनने वाली संसद को सही ढंग से चलाने को लेकर आशंकाएं पैदा होना शुभ संकेत नहीं। यह सही तरीका नहीं कि प्रधानमंत्री ने जैसे ही सभी दलों से यह संकल्प लेने का आग्रह किया कि वे संसद को चलने देंगे वैसे ही उसके संचालन में सबसे ज्यादा बाधा खड़ी करने वाली कांग्रेस के नेताओं ने सरकार पर ही दोष मढ़ दिया। हो सकता है कि आने वाले दिनों में सत्तापक्ष की ओर से इस दोषारोपण का कोई जवाब दिया जाए। जो भी हो, यही वे राजनीति के तौर-तरीके हैं जिनका परित्याग करने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति होनी ही चाहिए, क्योंकि इससे बड़ी विडंबना और कोई नहीं हो सकती कि जब देश संसद की ओर निगाहें लगाए हो तब वह ठहरी हुई नजर आए।

राजनीति समाज को दिशा देने वाली व्यवस्था है, लेकिन कुछ समय से वह खुद ही दिशाहीन दिख रही है। राजनीति की यह दिशाहीनता समाप्त होने में ही राजनीतिक दलों का हित निहित है। यह ठीक है कि हमारे देश में रह-रहकर चुनाव होते हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि राजनीतिक दल सदैव चुनाव की मुद्रा में दिखें। राजनीतिक दलों के लिए चुनाव जीतना अभीष्ट है, लेकिन उसे पूरा करने के लिए वे राष्ट्र की अपेक्षाओं-आकांक्षाओं की अनदेखी नहीं कर सकते। यह सही समय है जब राजनीतिक दल अपनी सोच में बदलाव लाएं, क्योंकि बिना इसके उनके तौर-तरीके भी नहीं बदलने वाले। सोच-विचार के स्तर पर बदलाव अन्य क्षेत्रों में भी नजर आना चाहिए, क्योंकि कई बार समस्याएं इसलिए गंभीर हो जाती हैं, क्योंकि न समाज के स्तर पर संजीदगी का परिचय दिया जाता है और न ही राजनीति के स्तर पर। इसी तरह कभी शासन अपेक्षित बुद्धिमत्ता और तत्परता का प्रदर्शन नहीं करता तो कभी प्रशासन। हर स्तर पर समस्याओं के समाधान के लिए यह आवश्यक है कि हर कोई इस भावना से कार्य-व्यवहार करे कि उसके सहयोग से ही चुनौतियों से पार पाया जा सकता है। कोई भी समाज और राष्ट्र समस्याओं से मुक्त नहीं हो सकता। व्यक्ति की तरह राष्ट्र का जीवन भी सदैव चुनौतियों से दो-चार होता रहता है। इस वर्ष उनका सामना हम और अधिक तत्परता और परिपक्वता के साथ कर सकें, यह हर किसी की कामना होनी चाहिए।

नया साल

नव वर्ष। नई उमंग और नई उम्मीदों के बीच नया संकल्प। प्रकृति भी पतझड़ के बाद नव पल्लव से आच्छादित होने को आतुर। प्रदेशवासी भी इसी मनोभावना से ओतप्रोत नए वर्ष का स्वागत करने को तत्पर हैं। नया पाने का उत्साह, मुराद पूरी होने की आशा, सपना साकार होने का भरोसा। अगले 12 महीनों को लेकर मन में जिज्ञासा, कुछ सवाल तो कुछ आशंकाएं भी। यह विचार कि जिस प्रयास में जुटा हूं, क्या वह ठीक रास्ते पर चल रहा है? क्या वह सफल हो पाएगा? क्या काम के तरीके में कोई बदलाव करना होगा? प्रदेश के स्तर पर सोचें तो यह सवाल दिमाग में आएगा कि पिछले साल क्या गंवाया? क्या होने से रह गया? नए साल में क्या मिलने जा रहा है? प्रदेश सरकार के लिए यह वर्ष चुनावी बजट का है। उसकी सोच रहेगी कि ऐसा क्या किया जाए और कहां-कहां किया जाए कि प्रतिपूर्ति वोट के रूप में हो। विपक्ष चाहेगा उसकी बात वोटरों के बीच तक चली जाए और प्रतिफल उनके पक्ष में मतदान के रूप में हो।

बहरहाल, तय है कि नए साल में सरकार की ओर से प्रदेशवासियों को कई उपहार मिलेंगे। ऐसी योजनाएं चल रही हैं जिनका क्रियान्वयन एक साल के अंदर हो जाएगा। आगरा, फर्रुखाबाद, कन्नौज के लोगों को प्रदेश की राजधानी पहुंचने के लिए नई सड़क मिलेगी। लखनऊ को मेट्रो मिलेगी, गोमती का किनारा नए अंदाज में दिखेगा, मुख्यमंत्री को नया आफिस मिलेगा, हाईकोर्ट के गोमतीनगर शिफ्ट हो जाने के बाद शहर की अन्य सड़कों पर यातायात का नया प्रेशर आएगा। बिजली सेक्टर में निजी क्षेत्र की दो बड़ी परियोजनाएं ललितपुर और बारा अपनी पूरी ताकत से काम करने लगेंगी, जिससे इस गर्मी में प्रदेशवासियों को बिजली कटौती से काफी राहत मिलेगी, अक्टूबर से ग्रामीण इलाकों को 16 घंटे और शहरों को 22 से 24 घंटे बिजली मिला करेगी। जिला पंचायतों के नए मुखिया अपने जिले को संवारने के लिए जुटेंगे, वहीं शहरी निकाय अपने आखिरी साल में जनता की समस्याएं दूर करती दिखाई देंगी। कुल मिलाकर नया साल काफी कुछ ला रहा है तो हमें भी कुछ बातों पर सतर्कता बरतने की जरूरत होगी। सबसे पहले सामाजिक सद्भाव बनाए रखना है, सोशल मीडिया की अफवाहों से दूर रह कर वही पोस्ट आगे बढ़ाने की आदत डालनी होगी जिसकी जिम्मेदारी हम खुद ले सकते हों। सरकार से पहले समाज की जिम्मेदारी है। यह कर सकें तो प्रदेश खुशहाली के रास्ते पर जरूर होगा।

सच से सजाएं नया साल

सबसे निचले पायदान के व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान को नए वर्ष का सबसे बड़ा संकल्प मान रहे हैं परिचय दास

टीएस इलियट की कविता की पंक्तियां हैं- समाप्त करने के लिए शुरुआत करनी होती है/ और अंत नहीं है, जहां से हम चलते हैं/हर वाक्यांश और वाक्य जो सही है/हर वाक्यांश और हर वाक्य प्रारंभ है और अंत भी! प्रारंभ और अंत परस्पर इतने आपस में गुंथे हुए हैं कि वे एक-दूसरे के पूरक लगते हैं। नवता या नूतनता के बिना यह संसार ठस बना रहेगा यानी जैसा है वैसा ही रह जाएगा, बल्कि उससे भी खराब। इसलिए नवता की प्राप्ति एक तरह से संघर्ष, पथ है। नववर्ष नए रास्ते की खोज है। जैसा है, उससे इतर यानी हटकर। जब हम अलग विन्यास तलाशते हैं तो एक नए किस्म का सौंदर्यबोध उपजता है। उसमें एक आवेग होता है। नया वर्ष एक संधि लग्न है। पुराना छूट रहा है, नए से सामना हो रहा है। पुराना तुरंत छूटता नहीं, नयापन आते-आते आता है। विगत के अवशेष स्मृतियों में बने रहते हैं। पूर्व स्मृतियों व पूर्वाग्रहों से मुक्ति बहुत कठिन है। कुछ स्मृतियां हटाए बगैर अन्य स्मृतियों को धारण कैसे रखा जा सकता हैं। यदि कुछ एसएमएस डिलीट नहीं करेंगे तो नए एसएमएस बने कैसे रहेंगे? कई बार भाषा सामूहिक व वैयक्तिक संघर्षों का मेमोरी बैंक बन जाती है। इस प्रकार भाषा में ऐतिहासिक चेतना की निरंतरता व परिवर्तन, दोनों की अभिव्यक्ति होती है। सामूहिक स्मृतिकोश के रूप में भाषा के इस पहलू को कुछ लोगों ने भाषा की रहस्यात्मक स्वाधीनता कहा है। मिशेल फूको ने कहा है-समुद्र के किनारे बनाए गए चेहरे की तरह निशान मिट जाएगा। निशान वास्तव में मिटता नहीं, वह रूपांतरित हो जाता है। जब एक वर्ष समाप्त होता है तो हमारे सामने विगत वर्ष के घटनाक्रम होते हैं।

जब कोई सहस्राब्दि अतीत बन जाती है तो हमें समाज, संस्कृति, सृजन, इच्छाशक्ति व सृष्टि के अभिप्रायों-रहस्यों का पुनर्निरीक्षण करना होता है। इसके लिए सर्जनात्मक संवेदना चाहिए, जिसका लगातार विलोपन होता गया है। कोहरे को छांटकर जो सूर्य निकलेगा उसकी धूमिल रोशनी में हम मनुष्य का कौन-सा चेहरा देखेंगे? वास्तव में हम ऐसा भविष्य व नववर्ष चाहते हैं जिसमें बच्चों की नृशंस हत्याएं न हों, जिसमें राजनीति भरोसे के लायक बने, जिसमें धन, मन, तन तीनों स्वच्छ हों। स्वच्छता सिर्फ तस्वीरों में न दिखे, वास्तविकता में प्रकट हो। वह जीवन का हिस्सा बन जाए। किसान आत्महत्या न करें और सत्ता व्यवस्थाएं उन्हें दया का पात्र न समझें। व्यक्ति जो कहे उससे लगे कि वह सच या झूठ बोल रहा है। आज पता ही नहीं चलता कि वह क्या बोल रहा है?

नववर्ष में पाखंड नहीं, सच का पर्यावरण निर्मित करें। सभी धर्म मनुष्यता की संस्कृति को सहज ही पल्लवित करें। मनुष्य की सर्जनात्मक शक्ति अपूर्व उत्साहपूर्ण उपलब्धियों से आरंभ हो तथा अंत निरर्थक व विनाशकारी निष्क्रियता में न हो। नववर्ष अनागत के अर्ध अंधकार में नया समय रचे। यादों के धुंधलके में खोने व सपनों के सतरंगी इंद्रधनुष पर रोशनियों के नए आयामों में प्रवेश करने की संतुलित कामना करें। नववर्ष एक सभ्यता रचे, जिसमें भविष्य की मंगलमय हल्दी माथे लगे। एक तितली भी कहीं उड़ती है तो समूचे ब्रह्मांड में स्पंदन महसूस होता है। इसी तरह हो रहे परिवर्तनों की गतिकी को स्वतः ही समझा जा सकता है। कृषि, औद्योगिकी व प्रौद्योगिकी से नए समाज का आधार बनता है। नए परिवर्तन अर्थशास्त्र व राजनीति की नई व्यवस्थाएं दे रहे हैं। लोग अब सिर्फ बोले हुए शब्द नहीं किए गए कार्य पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। नई राजनीति जहां इससे चूकी उसका पतन निश्चित है।

नया साल पावर शिफ्ट के रूप में देखा जाएगा। वर्चस्व के केंद्र टूटेंगे, नई विकेंद्रीयताएं आएंगी, हाशिये के लोग जगह के लिए जिद्दोजहद जारी रखेंगे। व्यापार, राजनीति, अर्थव्यवस्था, वैश्विक मामलों में अलग तरह से संघर्ष होगा। हिंसा से लोग आजिज आ चुके हैं। पारंपरिक रवैये व यांत्रिकता के समन्वय से नई गति के द्वार खुलेंगे। शर्त यह है कि उसमें नए समय के लिए बिंदुओं का निषेध न हो। परिवर्तन की प्रक्रिया और उसकी दिशा की चेतना पर्याप्त नहीं, बल्कि उस कौशल, प्रतिभा व सर्जनात्मक हस्तक्षेप का प्रशिक्षण भी अनिवार्य है जो समाज में संकट व हिंसा उत्पन्न किए बगैर समाज के विभिन्न समूहों के भौतिक व आध्यात्मिक उन्नयन के लिए उचित वातावरण तैयार कर सकें। भारतीय व पाश्चात्य, दोनों सभ्यताओं के अंतर्विरोधों को विश्लेषित किए बिना नववर्ष भविष्य के अंकुर नहीं उगा सकता।

नववर्ष की नवता का अर्थ है व्यक्ति की गरिमा की बहाली, नए संकल्पों का उदय, वैयक्तिक स्वतंत्रता का विचार, आत्मनिर्णय का अधिकार। नया समय लोक के 'आत्म' को झकझोरेगा, क्योंकि भाषाई व सांस्कृतिक विविधताओं को बचाने के लिए यह जरूरी है। ग्लोबल सभ्यता में क्षेत्रीय व राष्ट्रीय संस्कृतियों के विलयित होने के बजाय संतुलन व परस्पर संवाद हो। नववर्ष का यह अभीष्ट है। तभी भविष्य के चित्र में हमारी विविध धाराओं के रंग भरे जा सकेंगे। अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटकर नया वर्ष या नया समय नहीं लाया जा सकता। नववर्ष पदचिह्नों पर चलने के बजाय नया पथ रचने का हेतु है। हमें वह जीवन खोजना होगा जो जिंदा रहने के क्रम में हमने खो दिया है। वह प्रज्ञा कहां है जो हमने ज्ञान में खो दी है। वह ज्ञान कहां है जो हमने सूचना में खो दिया है। सूचनाओं की विवेकशीलता चाहिए, न कि गुलामी। धार्मिकता की केंद्रीयता व धर्मनिरपेक्षता के द्वंद्व, दोनों पर पुनर्विचार आवश्यक है। अगले समय में 'अग्रसर' होने का विचार और स्वाधीनता सतही होते गए हैं। दिल्ली में प्रदूषण, बनारस में लाशों की गंध, कानपुर का जनघनत्व, बेंगलुरु का ट्रैफिक जाम, कोलकाता के धीरे-धीरे क्षरित होते जाने, मुंबई-दिल्ली के अमानुषिक अपराधों को परे रखकर आप नववर्ष की मंगलमयता की कल्पना नहीं कर सकते। इनसे उबरने की प्रकल्पशीलता तीव्र गति से लानी होगी। अवांछित शिक्षाक्रमों से गुजरते हुए जो युवा जीविका के लिए तरस रहे हैं उनके नववर्ष पर विचारना होगा।

इस नए साल को भावनात्मक लय में बदलना होगा। कुछ ठोस कदम व्यवस्था, समाज व व्यक्ति द्वारा उठाने होंगे। नववर्ष यथार्थ की भूमि पर स्वप्नभरी आंखों में नई चमक दे। कलाकार की कला, किसान का शिल्प, मेहनती के श्रम का सौष्ठव हो तो नववर्ष मंगल। सबसे निचले पायदान के आदमी के मुंह से फूल झरें तो नववर्ष मंगल। असहाय व निष्प्रेषित के मन में गुब्बारे और पेट में अन्न हो तो नववर्ष मंगल। अपरिमेय संभावनाओं वाले भारत का भविष्य रचने के लिए केंद्रबिंदु उपेक्षित को ही रखना होगा।

(लेखक हिंदी, भोजपुरी अकादमी दिल्ली में सचिव रहे हैं)

response@jagran.com

मंगलमय हो शुरुआत

◆ नववर्ष को भावनात्मक लय में बदलना होगा। कुछ ठोस कदम व्यवस्था, समाज व व्यक्ति द्वारा उठाने होंगे। नववर्ष यथार्थ की भूमि पर स्वप्नभरी आंखों में नई चमक दे

निर्माण का निर्णायक क्षण

नए साल में नई पीढ़ी के निर्माण के लिए कार्यसंस्कृति में बुनियादी बदलाव की जरूरत रेखांकित कर रहे हैं जगमोहन सिंह राजपूत

किसी भी समाज या देश में कार्यकारी समूह के मुख्य उद्देश्य का तानाबाना आगे आने वाली पीढ़ियों को वर्तमान से अधिक अच्छा जीवन जीने के अवसर प्रदान करने के इर्द-गिर्द ही बुना जाता है। यह लक्ष्य परिवार से प्रारंभ होकर राष्ट्र तथा वैश्विक स्तर तक सदा स्वीकार्य बना रहता है, लेकिन मनुष्य के अनेक कार्यकलाप ठीक इसका उल्टा ही दर्शाते हैं। कौन नहीं जानता है कि प्रकृति तथा मनुष्य के बीच की संवेदनशील कड़ी को बिना छेड़छाड़ सामान्य बनाए रखना मनुष्य का ही कर्तव्य है, क्योंकि उसे भविष्य को समझने और आगे के लिए सोच समझ कर कार्य करने के लिए मस्तिष्क और बुद्धि मिली हुई है। वह उपयोगी तथा अनुपयोगी के अंतर को जानता है। अच्छाई तथा बुराई के अंतर को पहचानने की क्षमता रखता है, यह अन्य को उपलब्ध नहीं है। मनुष्य के पास तथ्य हैं, जानकारी है, विश्लेषण करने की क्षमता है, मगर उसका विवेकसंगत विवेचन एवं उपयोग नहीं हो रहा है। यदि ऐसा न होता तो हम सब के देखते-देखते जंगल उजड़ते नहीं, पशु-पक्षियों की प्रजातियां लगातार समाप्त न हो रही होतीं, तालाब विलुप्त नहीं होते, नदियां प्रदूषित न होतीं, हवा जहरीली नहीं होती और मनुष्य के पृथ्वी पर बने रहने या न रहने को लेकर वैज्ञानिक अनुमान न लगा रहे होते। हर माता-पिता तथा परिवार को सबसे अधिक प्रिय तो बच्चे ही होते हैं। वे राष्ट्र की धरोहर तथा भविष्य माने जाते हैं। उन्हें सही दिशा देना, उचित शिक्षा प्रदान करना, जीवन-कौशल तथा उत्पादकता से जुड़े कौशल सिखाना परिवार, व्यवस्था तथा सरकार का सर्वोपरि कर्तव्य होता है। अपेक्षा तो यही होनी चाहिए कि उनके पालन-पोषण तथा उनकी प्रतिभा के प्रस्फुटन के लिए परिवार, समाज तथा सरकारें कोई कसर बाकी नहीं रखेंगी।

देश में यह भी बड़े असमंजस की स्थिति दिखाई देती है कि लगभग सात दशक बाद भी लगभग एक करोड़ बच्चे ऐसे हैं जो कभी स्कूल में गए ही नहीं। शिक्षा व्यवस्था से जुड़े अधिकांश लोग यह मानने लगे हैं कि इस देश में प्रारंभिक स्तर पर 65-70 प्रतिशत बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियां अपेक्षा से काफी नीचे रहती हैं। अतः इनके लिए स्कूल में बिताए गए आठ या दस वर्षों का कोई बड़ा सकारात्मक प्रभाव जीवनयापन या जीवन जीने की कुशलता पर नहीं पड़ता है। ऐसा होने से शिक्षा व्यवस्था की अकर्मण्यता के साथ-साथ अन्य कई तत्व भी शामिल होते हैं और इनमें स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं की घोर अनदेखी भी शामिल है। भारत में लगभग आधी गर्भवती महिलाएं एनीमिया की शिकार होती हैं। प्रतिवर्ष लगभग आठ लाख नवजात शिशुओं की अकाल मृत्यु हो जाती है। एक अनुमान के अनुसार लगभग 4.4 करोड़ बच्चे अवरुद्ध विकास के शिकार हैं। बाल श्रमिकों की समस्या छोटी नहीं है। 2001 से 2011 के बीच इनकी संख्या में केवल 2.2 प्रतिशत प्रतिवर्ष की कमी हो रही है, जो चिंताजनक है।

भारत के युवा ही उसकी सबसे महत्वपूर्ण मानवीय पूंजी हैं। यदि बच्चों तथा युवाओं की ये स्थिति बनी रही तो क्या यह संकल्पना साकार हो सकती है कि भारत एक युवा देश है अतः वह विश्व के बूढ़े होते देशों की कार्यकारी मैन पॉवर आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है और भारत की सम्मानपूर्ण वैश्विक उपस्थिति को और फैला सकता है। भारत की अर्थव्यवस्था सबसे अधिक तेजी से बढ़ रही मानी जाती है। 21वीं सदी भारत की होगी, ऐसा भी बार-बार दोहराया जा रहा है और यह सब अत्यंत उत्साहजनक दिखाई देता है-तब तक जब तक आप बच्चों के स्वास्थ्य तथा शिक्षा की वास्तविक स्थिति को नजरअंदाज कर सकें। यहां यह कहना भी आवश्यक है कि प्रयास तो किए जा रहे हैं, मगर हमारी कार्यसंस्कृति की सीमाएं इन प्रयासों को लगातार अवरुद्ध करती हैं। कार्य संस्कृति तथा दृष्टिकोण परिवर्तन एक जटिल तथा लंबा चलने वाला प्रयास ही हो सकता है। नववर्ष के संकल्प के रूप में इस दिशा में अनथक तथा सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है। ऐसे प्रयासों के लिए आवश्यक है हर स्तर पर राजनीतिक इच्छाशक्ति तथा ईमानदार, सक्षम तथा कर्मठ नेतृत्व। दुर्भाग्य से दलगत राजनीति हर स्तर तक अपनी पहुंच बना चुकी है। यह अवांछनीय परिवर्तन ऊपर से नीचे आया है और इसमें सुधार भी तभी होगा जब राष्ट्रीय स्तर पर ही समभाव, समरसता तथा अनुकरणीय आचरण के उदाहरण प्रस्तुत किए जाएंगे। राष्ट्र की प्रगति में शिक्षा के योगदान को दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। शिक्षा यदि उचित ढंग से तथा सही विषयवस्तु के साथ प्रदान की जाए तो वह सामाजिक समरसता तथा पंथिक भाईचारे को ठोस आधार दे सकती है। समाज की अनेक विषमताओं को दूर कर सकती है। दुर्भाग्य से आज का अधिकांश युवा वर्ग अपने को घोर असमंजस की स्थिति में पाता है। उसके सामने कोई ऐसे आदर्श उदाहरण नहीं हैं जो आगे की दिशा दिखा सकें। इस समय भारत की प्रगति के लिए तथा उसकी युवा शक्ति को सर्जनात्मक योगदान योग्य बनाने के लिए आवश्यक है कि बच्चों तथा युवाओं के स्वास्थ्य के लिए युद्ध-स्तर पर व्यवस्था की जाए।

यदि शिक्षा और स्वास्थ्य की देखभाल की यही स्थिति बनी रही तो युवा जनसंख्या के स्वर्णिम काल का सपना साकार कैसे होगा। 2011 के जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार 11.61 करोड़ लोगों को रोजगार चाहिए था। इसमें तकनीकी स्नातकों का प्रतिशत 15.7 था। हम यह भी जानते हैं कि हर चार इंजीनियर में केवल एक ही पूरी तरह प्रशिक्षित तथा जिम्मेदारी संभालने लायक पाया जाता है। आज सैकड़ों की संख्या में तकनीकी महाविद्यालय बंद हो रहे हैं। होना तो इसका उल्टा चाहिए था। इतने वर्षों के अनुभव के बाद भी हाथ से काम करने के प्रति लगाव तथा सम्मान पैदा करने के सार्थक तथा सफल प्रयास नहीं हुए हैं। कौशल प्रशिक्षण के लिए नई योजनाओं की घोषणा की गई है। इस दिशा में सबसे प्रभावी योगदान शिक्षक तथा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय कर सकते हैं। इस ओर अभी तक पूरी तरह ध्यान नहीं दिया जा सका है। यदि शिक्षक प्रशिक्षण को सुधारा जा सके तो उसका प्रभाव स्कूलों पर ही नहीं, अंततः हर क्षेत्र में गुणवत्ता तथा कार्य संस्कृति पर पड़ेगा। 2016 में इसे प्राथमिकता मिलनी ही चाहिए।

(लेखक एनसीईआरटी के निदेशक रह चुके हैं)

response@jagran.com

जरूरी प्राथमिकता

◆ कार्य संस्कृति में परिवर्तन लंबा चलने वाला प्रयास ही हो सकता है, फिर भी नववर्ष में इस दिशा में सार्थक कदम उठाने की आवश्यकता है

ऊर्जा

परिवर्तन का प्रभाव

प्रकृति में हर पल अनंत सहजता और रचनात्मकता है। प्रत्येक दिन सूर्य उगता है, लेकिन वह प्रत्येक दिन अद्वितीय रूप से सुंदर और अलग होता है। यह सब हमारे जीवन के विभिन्न अनुभवों के लिए भी है। सब कुछ समान दिखता है, फिर भी कहीं न कहीं वह अपने आप में अलग है। एक साल खत्म हुआ और दूसरा प्रारंभ। प्रकृति में परिवर्तन नियति है और कुछ परिवर्तन के प्रभाव मानव के मानस पटल पर अंकित हो जाते हैं। यही परिवर्तन के प्रभाव हमारे जीवन को चलाते भी हैं। प्रत्येक व्यक्तित्व के जीवन की पूर्व घटनाओं को दोहराने के दो लाभ हैं। पहला, समझ और ज्ञान को पुष्ट करता है तथा दूसरा, अवांछित लक्षणों को जो हमारे विचारों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं, हमसे दूर कर देता है। अक्सर जब चुनौतियां और संकट आते हैं तो हमारी आदत है कि हम स्वयं को गुफाओं में घुसा लेते हैं और कहते हैं, 'यह मेरी समस्या नहीं है, जिसकी है वह उसे हल करे।' आज के वैश्विक परिदृश्य में पूरे विश्व की जिम्मेदारी लेने के लिए कई विकल्प उपलब्ध हैं। मध्ययुगीन काल में विश्व के एक हिस्से में कोई समस्या होती थी तो दूसरे हिस्सों को पता भी नहीं चलता था। अब तकनीक ने यह कमी दूर कर दी है और विश्व का प्रत्येक हिस्सा किसी भी बदलाव से अप्रभावित नहीं है। पिछले वर्ष हमने असहिष्णुता के मुद्दे के लिए बनाई गई विशाल श्रृंखला को देखा। मैं मानता हूं कि भारत एक संतुष्ट राष्ट्र है, जबकि हमें असमानता, अन्याय व भ्रष्टाचार के खिलाफ असहिष्णु होने की आवश्यकता है। सहिष्णु का अर्थ संतुष्ट और असहिष्णु का अर्थ आक्रामक होना नहीं है।

किसी भी मुद्दे या विवाद को हल करना तब आसान हो जाता है जब हम उसके लिए पहल करते हैं। यह युग अभूतपूर्व परस्पर निर्भरता का युग है। हमें अपने बनाए छोटे-छोटे समूहों से सामूहिक व व्यक्तिगत स्तर पर निकलकर बाहर आना होगा। हरेक इसमें सहयोग कर सकता है बस जरूरत है तो प्यार और गर्मजोशी का वातावरण बनाए रखने की। यदि आप जीवन में एक विशाल दृष्टिकोण से चलते हैं तब प्रकृति के साथ आपका संबंध पुनर्स्थापित हो जाता है। आपको स्वयं अहसास होगा कि आप ही उस प्रकृति का हिस्सा हैं जो लगातार कुछ न कुछ रच रही है।

◆ **श्रीश्री रविशंकर**

(प्रणेता, ऑर्ट ऑफ लिविंग)

जागरण Junction AAPKI AWAAZ, AAPKA BLOG **www.jagranjunction.com**

नई चुनौतियां, नए अवसर

हर नया साल कुछ अवसर, कुछ चुनौतियां साथ लेकर आता है। इसलिए 2016 की शुरुआत के समय इस बात का एक आकलन अवश्य किया जाना चाहिए कि 2015 में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से पूरे विश्व ने किन चुनौतियों का और किस सीमा तक सामना किया। इस बात से हमें नए वर्ष का स्वागत सजगता के साथ करने में काफी हद तक सहूलियत तो होगी ही। साथ ही साथ चुनौतियों का सामना करने को भी हम काफी हद तक तैयार भी हो सकेंगे। 2015 की शुरुआत में ही फ्रांस की व्यंग्य पत्रिका शार्ली अब्दो के पेरिस स्थित ऑफिस में हमलावरों द्वारा 12 लोगों की हत्या की खबर ने पूरे विश्व को हिला कर रख दिया था। आइएस के आतंक का सिलसिला पूरे साल कायम रहा और दुनिया को यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि हम किस ओर जा रहे हैं। एक अन्य चुनौती पर्यावरण को बचाने की भी है। नए साल के जश्न के साथ तमाम चुनौतियों और सवालों के हल खोजना और समस्याओं को समझना निश्चित रूप से दिलचस्प होने वाला है। **- मिथलेश कुमार सिंह**

पूरा ब्लॉग पढ़ने के लिए यथावत टाइप करें : http://bit.ly/1QXaUTH

न्याय पर सवाल

पिछले कुछ वर्षों से जिस तरह से न्यायपालिका ने विधायिका और कार्यपालिका को प्रभावित किया है वह प्रशंसनीय है। किंतु हाल ही में लिए गए एक फैसले ने आम लोगों को न्यायालयों के प्रति उनका पुराना नजरिया बनाए रखने को मजबूर कर दिया है। यह घटना है मुंबई का हिट एंड रन मामला। चूंकि मामला अभिनेता सलमान खान से जुड़ा है अत: पूरे देश की नजरें इस केस पर टिकी हुई थीं। उच्च न्यायालय ने सुबूतों के अभाव में सलमान को इस केस से बरी कर दिया। हालांकि निचली अदालत ने उन्हीं सबूतों के आधार पर उन्हें पांच साल कारावास की सजा सुनाई थी। उच्च न्यायालय ने अपने फैसले में यह कहा है कि इसके पर्याप्त साक्ष्य नहीं है कि सलमान ही गाड़ी चला रहे थे। उच्च न्यायालय के इस फैसले को किस आधार पर सही माना जाए? **- हरीश राय**

पूरा ब्लॉग पढ़ने के लिए यथावत टाइप करें : http://bit.ly/1Vp56RT

विरोध का अधिकार

प्रशांत मिश्र ने अपने लेख नकारात्मक सियासत का साल में कांग्रेस को 2015 में अनावश्यक नकारात्मकता का दोषी माना है। लेकिन क्या यह सच है? पता नहीं क्यों कांग्रेस के विरोध को नकारात्मकता से जोड़ दिया जाता है। एक विपक्षी दल के रूप में कांग्रेस को केंद्र सरकार के कार्यों की आलोचना करने का अधिकार है। क्या संसद में हुए हंगामे के लिए केवल विपक्ष जिम्मेदार है? क्या उन सभी मामलों की अनदेखी कर दी जानी चाहिए जो मोदी सरकार को कठघरे में खड़ा करते हैं। अगर सरकार के गलत कार्यों को विपक्षी दल उजागर नहीं करेंगे तो कोई भी सत्ता निरंकुश हो जाएगी। आत्मचिंतन की आवश्यकता तो मोदी सरकार को है जो लगभग हर मोर्चे पर विफल साबित हो रही है। यह संभव है कि किसी मामले के विरोध में कांग्रेस एक-दो कदम आगे चली गई हो, लेकिन इसे उसकी नकारात्मकता बता देना कहां तक उचित है?

अंकित कुमार, मयूर विहार, दिल्ली

नए साल का बहाना

हम 2016 में प्रवेश आज कर चुके हैं और हर बार की तरह इस बार भी साल 2015 के अंत में आम आदमी से लेकर नेता तक सभी ने यह प्रण लिया होगा की नए साल के साथ एक नई शुरुआत करेंगे बुराई, असमाजिक तत्वों तथा पर्यावरण की समस्या दूर करेंगे और भ्रष्टाचार, बेईमानी, बेरोजगारी, हिंसा, अशिक्षा, असमानता, गरीबी, महंगाई, आतंकवाद, नक्सलवाद का अंत करेंगे। लेकिन बीते गत सालों का इतिहास देखकर लगता नही है कि अच्छे दिन इतनी जल्दी आएंगे क्योंकि कुछ समस्याएं निरंतर समाज में बरकरार बनी हुई हैं। हम हर बार साल के अंत में सिर्फ झूठी कसम खाते हैं हर बार नए साल का बहाना लेकर बदलाव की बात कहने से कुछ नहीं होगा हमें सच में बदलाव लाना होगा और इसकी शुरुआत हमें अपने घर से करनी होगी।

tul7866@gmail.com

पाठकनामा

pathaknama@nda.jagran.com

पहले होमवर्क जरूरी

नए साल और दिल्ली सरकार के सम विषम फॉर्मूले की शुरुआत एक साथ हो रही है। आशा करते हैं कि नए साल के साथ दिल्ली सरकार के यह फॉर्मूला हिट हो। मगर अभी तक दिल्ली सरकार के इस कानून के हिट होने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं। सरकार ने जब से दिल्ली में सम विषम फॉर्मूला लागू करने की बात की है तब से इस फॉर्मूले में काफी बदलाव आए हैं। यह बदलाव फॉर्मूले के होमवर्क न करने से आए हैं। अगर दिल्ली सरकार इस पर पूरे तरीके से होमवर्क करके आती तो इन्हें ज्यादा दिक्कतों का सामना न करना पड़ता।

lokeshkhera29@gmail.com

बार-बार चुनाव का होना

आज देश में कहीं न कहीं, कोई न कोई चुनाव होते रहते हैं। इन चुनाव में बेहिसाब पैसे बर्बाद किए जाते हैं। पुलिस सुरक्षा बलों से लेकर पूरा प्रशासनिक अमला इन चुनावों में खपा दिया जाता है। लगातार चुनाव होने से सरकार की कार्यशैली भी प्रभावित होती है। केन्द्र सरकार हमेशा दवाब में रहती है। कोई बड़ा फैसला लेने से पहले केन्द्र सरकार को ये देखना पड़ता है कि किसी राज्य में चुनाव तो नहीं है। बार-बार चुनाव होने से अब जनता भी आकर्षित नहीं होती।

anilmahure~~@gmail.com

समय की नजाकत

प्रदीप सिंह के लेख 'भाजपा के दो चेहरे' में उन्होंने उदाहरणों से भाजपा के दो पक्ष जो कि एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं, दर्शाने की कोशिश की है, लेकिन क्या यह उचित है ? मसलन, एक उदाहरण लेते हैं- मान लीजिये कि आपकी आपके पड़ोसी घर से लड़ाई हो गई, तो क्या आप पूरी जिंदगी उस पड़ोसी से नफरत करेंगे और बात नही करेंगे ! शायद आपका उत्तर नहीं में होगा। इसी प्रकार मोदी सरकार भी समय की नजाकत को समझते हुए हमारे पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान और जम्मू कश्मीर के नेता एवं वहां की आवाम से रिश्ते मधुर करने का प्रयास कर रही है। यहां तक की पूरे विश्व स्तर पर मोदी की अचानक पाकिस्तान यात्रा की सराहना की गई है। यह प्रयास दक्षिण एशिया को मजबूती प्रदान करने में काफी मददगार साबित होगा।

saurabhmishra193@gmail.com

जनपथ

सोलहवां सावन लगा दिखती सदी जवान,
नए वर्ष में मस्त है अल्हड़ हिंदुस्तान।
अल्हड़ हिंदुस्तान न इसका कोई सानी,
अगर लेय यह ठान पिला दे सबको पानी।
चढ़ते सूरज भांति लगे यह देश यूं जवां,
अभी-अभी ज्यों साल लगा इसको सोलहवां।

-ओमप्रकाश तिवारी

ट्वीट ट्वीट

वर्ष 2016 आप सबके जीवन में खुशियां, सार्वजिनक बहस में संजीदगी, शासन के तौर-तरीकों में बुद्धिमत्ता और विश्व में सद्भाव लाए। नव वर्ष शुभ हो!

- जयप्रकाश नारायण
@JP_LOKSATTA

2015 में मोदी ने कोई नए मित्र नहीं बनाए, बल्कि उन्होंने अपने शत्रुओं को मजबूत होते देखा। ऐसा लगता है कि 2016 उनके लिए करो या मरो वाला साबित होगा।

- संजय हेगड़े
@sanjayuvacha

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या आप महसूस करते हैं कि असम में इस बार भाजपा भी सत्ता पाने की दावेदार है?

आज का सवाल

क्या आपको उम्मीद है कि संसदीय कामकाज के नजरिये से नया साल 2015 की तुलना में बेहतर साबित होगा?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर POLL लिखें, स्पेस देकर Y, N या C लिखकर 57272 पर भेजें

Y-हां, N-नहीं, C-कह नहीं सकते

परिणाम एसएमएस से प्राप्त नतीजों के साथ जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।